647510 **0701259f2022** **Seat No :_________**

B.R.S. Semester - 2 (*CBCS*) Examination
March/April. -2019 (Old Course)
HINDI (FOUNDATION 4)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न १ मैथिलीशरण गुप्त के जीवन – कवन पर प्रकाश डालिए। (१५)

अथवा

प्रश्न १ खण्डकाव्य के लक्षणौं के आधर पर 'पंचवटी' खण्डकाव्य का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न २ निम्नांकित प्रश्नों के सूचनानुसार उत्तर दीजिए। (१५)

(अ) निम्नाअंकित मुहावरों मे से किन्हीं सात के अर्थ दीजिए। (०७)

(1) चल बसना। (2) आँखो में खून उतर आना।
(3) काला अक्षर भैंस बराबर। (4) हाथ पिले करना
(5) लोहे के चने चबाना । (6) गागर में सागर भरना ।
(7) सिर पर कफन बाँधना । (8) सिर पर भूत सवार होना।
(9) बातें बनाना। (10) आकाश के तारे तोड़ लाना।

(ब) निम्नांकित परिच्छेद का गुजराती भाषा में अनुवाद कीजिए। (०८)

"प्रेमचन्दजी बहुत – ही सीधे सादे आदमी थे, घर के बाहर और घर के भीतर कहीं भी उनमें दुरंगापन नहीं था। सब जगह वह एक थे, झील के पानी की तरह साफ और पारदर्शक। यही उस आदमी की सबसे बडी महानता थी कि वह किसी तरह से महान नहीं दिखना चाहते थे। न कपडे लते में, न तौर तरिको में, न बोल – चाल में, न रहन – सहन में। हर और से वह आदमी एक साधारण निम्न मध्यवर्ग के आदमी थे।"

प्रश्न ३ निम्नांकित में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। (१५)

(१) "कोई पास न रहने पर भी
जन – मन मौन नहीं रहता,
आप आपकी सुनता है वह
आप आपसे है कहता।"

(२) "पर मैं ही यदि परनारी से पहले सम्भाषण करता।
तो छिन जाती आज कदाचित पुरुषों की सुधर्म परता॥"

(३) "नर कृत शास्त्रों के सब बन्धन
है नारी को ही लेजर,
अपने लिए सभी सुविधाएँ
पहले ही कर बैठे नर।"

(४) हाँ नारी! किस भ्रम में है तू, प्रेम नहीं यह तो है मोह,
आत्माका विश्वास नहीं यह, है तेरे मन का विद्रोह।"

(५) होता यदि राजत्व मात्र ही
लक्ष्य हमारे जीवन का,
तो क्यों अपने पूर्वज
उसको छोड़ मार्ग लेते वन का?

प्रश्न ४ पंचवटी खण्डकाव्य के नायक लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (१५)

अथवा

प्रश्न ४ सीता का चरित्र – चित्रण कीजिए।

प्रश्न ५ पंचवटी का उद्देश्य। (१०)

अथवा

प्रश्न ५ 'पंचवटी में प्रकृति चित्रणे पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

****